P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजा रवि वर्मा के चित्रों में अंकित आभूषण–अभिकल्पन

प्रसून यादव
शोध छात्रा,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

तनुजा सिंह
शोध निदेशक,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

सारांश

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में चित्रकला का अधिपतन हो गया था और चित्रकला की कलात्मक विशेषताएँ धीरे–धीरे खत्म सी होने लगी थी। मुगल कला के पतन के बाद कलाकार विभिन्न दिशाओं में चले गये और वहाँ कला का विकास होने लगा। इसी समय में पाश्चात्य कला की धारा ने अनेक भारतीय चित्रकारों को प्रभावित किया और उन्होने पाश्चात्य चित्रकला में दक्षता प्राप्त की। इन चित्रकारों में 'राजा रवि वर्मा' का नाम अगण्य है। आपने यूरोपीय कला पद्धति के अनुरूप भारत की चित्रकला को एक नई धारा व नवज्योति प्रदान की। आपने उन्नीसवीं सदी में भारतीय हिन्दू कला का जो नवोत्थान किया था उसमें आपका प्रशंसनीय योगदान था। आपके चित्रों के विषयों में विविधता रही है किन्तु उनमें पौराणिक विषयों और राजाओं के व्यक्ति चित्रों का आधिक्य रहा है। राजा रवि वर्मा के चित्र यथार्थवादी शैली के होने के कारण आपने देवी–देवताओं, राजाओं व नारी सौन्दर्य हेतु आभूषण अलंकरण को अत्यधिक महत्व दिया गया है।[1]

मुख्य शब्द : अभिकल्पन, आभूषण, पौराणिक कथाएं, संस्कृति।

प्रस्तावना

राजा रवि वर्मा का नाम एक ऐसे कलाकार को आँखों के सामने प्रस्तुत करता है जिसने भारतीय कला को युगांतरकारी सम्मान प्रदान किया। वे अपने युग के अत्यंत लोकप्रिय एवं सफल चित्रकार थे, जो यूरोपीय शैली में प्रमुख प्रतिनिधि भारतीय कलाकार थे। आपका जन्म केरल प्रदेश के किलीमन्नूर नामक गाँव में 29 अप्रैल 1848 ई. को एक राज परिवार में हुआ जिसका निकट सम्बन्ध पूर्ववर्ती त्रावणकोर राज्य के शासकीय राजवंश से था। रवि वर्मा को बाल्यकाल से ही कला में विशेष रूचि थी। इसकी प्रेरणा उन्हें अपने चाचा से प्राप्त हुई। भारत भ्रमण आए यूरोपीय कलाकार थियोडोर जेनसन व समसामयिक कलाकार अलाग्रि नायडू से कला दीक्षा ली।

अध्ययन का उद्देश्य

मैं मेरे इस शोध पत्र में राजा रवि वर्मा के चित्रों में अंकित आभूषण–अभिकल्पन के महत्व को दर्शाना चाहती हूँ। चित्रकला के सन्दर्भ में आभूषण अलंकरण का प्रमाण हमें अजन्ता गुफा चित्रों पाल, मुगल, राजस्थानी व पहाड़ी शैलियों में देखने को मिलता है। आभूषण अलंकरण का प्रयोग चित्रकला के सन्दर्भ मे केवल सौन्दर्यात्मक वस्तु के रूप में किया गया है। मैं मेरे इस शोध पत्र के द्वारा यह दर्शाना चाहती हूँ कि जिस प्रकार राजा रवि वर्मा अपने चित्रों में आकृतियों को यथार्थ रूप दिया है उसी प्रकार उन्होनें सौन्दर्य हेतु आभूषणों अलंकरण को भी महत्व प्रदान किया है। उनके चित्रों में आकृतियॉ रत्नों, स्वर्ण धातु व अनेको मोतियों की मालाओं से अलंकृत बनाई गई हैं। देवी–देवताओं, राजा–रानी के व्यक्ति चित्रण पौराणिक कथाओं के चित्र व सामाजिक परिवेश पर आधारित चित्र सभी में उस समय के परिस्थितियों के आधार पर आभूषण अलंकरण किया गया है। राजा रवि वर्मा के चित्र आज हमारे समक्ष भारतीय संस्कृति को प्रस्तुत करते है।

राजा रवि वर्मा को त्रावणकोर के महाराजा, बड़ौदा के गायकवाड़ व अन्य धनी व्यक्तियों का संरक्षण प्राप्त था। जिस कारण उन्होंने बड़ौदा प्रवास काल में बड़े–बड़े दो दर्जन पटों पर महाभारत और रामायण के प्रसंगों के चित्रों और बहुत से पारिवारिक आकृति चित्रों का अंकन किया जो लक्ष्मी निवास राजमहल में सुरक्षित है। इस समय रचित निम्नलिखित चित्रों नल–दमयंती, राधा और माधव, अर्जुन–सुभद्रा, भरत–शांतनु और गंगा, वृंदावन में कृष्ण की प्रतीक्षा करती राधा, दो सखियों के साथ शकुन्तला का पत्र लेखक, प्रियवंदा और उर्वशी, लक्ष्मी और सरस्वती ये सभी चित्र बड़ौदा संग्रहालय और राजमहल में सुरक्षित है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

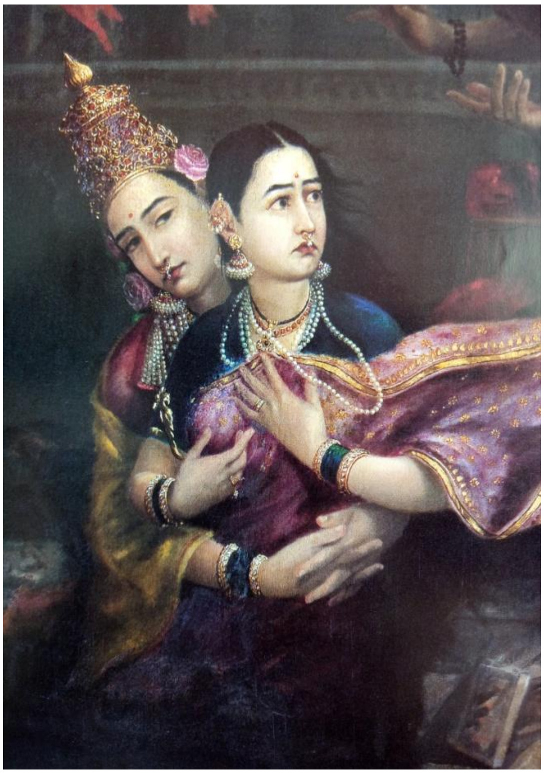

राजा रवि वर्मा की कलाकृतियों को तीन प्रमुख श्रेणियों में बाँटा गया है। (अ) प्रतिकृति या (पोर्ट्रेट) (ब) मानवीय आकृतियों वाले चित्र तथा (स) इतिहास व पुराण की घटनाओं से सम्बन्धित चित्र। यद्यपि जनसाधारण में राजा रवि वर्मा की लोकप्रियता ऐतिहासिक पुराणों व देवी–देवताओं के चित्रों के कारण हुई लेकिन तैल माध्यम से बनी अपनी प्रतिकृतियों के कारण वे विश्व में सर्वोत्कृष्ट चित्रकार के रूप में जाने गये। आपके चित्रों में आभूषणों का विशेष महत्व रहा है। आपने अपने चित्रों में नारी को विशेष महत्व दिया है। नारी के देह सौन्दर्य व साज–सज्जा हेतु आभूषण अलंकरण पर विशेष बल दिया गया। जिसमें मोतियों, स्वर्ण व रत्नों से अलंकृत आभूषण यथार्थरूप में बनाए गए हैं। राजाओं व रानियों के व्यक्ति चित्रण में राजसी वैभव को दर्शाने हेतु मुकुट, मोतियों की अनेकों लडो की मालाएँ व स्वर्ण धातु के अलंकृत अनेकों आभूषण बनाए गए हैं जिसमें विशेषकर बुलाक जो दक्षिण का प्रसिद्ध नाक का आभूषण है, इसके अतिरिक्त कानों में झुमकीनुमा कर्णफूल, कण्ठ में मोतियों के गुच्छों से अंकित अनेकों माणिक्य व मुक्तामालाएँ, हाथों व पैरों में विभिन्न धातु से सुसज्जित अनेकों आभूषण बनाए गए हैं। आपके द्वारा चित्रों में से कुछ चित्रों में अंकित आभूषणों का विवरण इस प्रकार से है।

राजा रवि वर्मा ने अपने कला जीवन में हिन्दु पौराणिक विषय में सम्बन्धित अनेकों चित्रों को बड़े ही सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया है। इसी चित्र श्रृंखला में 'कृष्ण और यशोदा' एक अत्यन्त सुन्दर चित्र है।

जिसमें बाल रूप कृष्ण निर्वस्त्र चित्रित किए गए है। केश में मोर मुकुट पहने सौम्य मुखमण्डल वाले बाल गोपाल अपने दाये हाथ से माँ का आँचल पकड़े हुए है। अपने बाये हाथ से बाल गोपाल को थामे यशोदा माँ सुन्दर मुख मण्डल वाली मातृत्व से परिपूर्ण एक देवी के रूप में चित्रित की गई है। हल्के नीले, बैंगनी रंग के वस्त्र पहने यशोदा अनेक आकर्षक रत्नों व मोतियों के आभूषणों

से सुसज्जित है। दोनों आकृतियों को अनेकों बहुमूल्य आभूषण से अलंकृत बनाया गया हैं जिसमें बाल रूप कृष्ण के शीर्ष पर मोतियों से युक्त फुन्दा व सिरमांग, कानों में माणिक्य व मोतियों से युक्त झुमकी व ऊपरी भाग में मोतियों से युक्त अनेकों बालियाँ, नाक में बुलाक, कण्ठ आभूषणों में पेन्डल युक्त कण्ठ माला, स्वर्ण चेन, वक्षस्थल पर सफेद मोतियों से युक्त एक लड़ वाला, अन्त में तीन लड़ों से अंकित मोतियों की माला जिसकें मध्य हरे रंग के बड़े आकार का रत्न जड़ा हुआ धारण किया है। कमर पर काञ्ची मेखला, पैरों में बड़े कड़े अलंकृत किए गए हैं।

यशोदा माँ बालकृष्ण को स्नेह करते हुए नामक चित्र पुदुक्कोदूई एंड हजरात मेंहदी पैलेस, तंजापुर में संरक्षित है। यह एक पौराणिक कथाओं पर आधारित चित्र है। जिसमें बाल गोपाल अपनी माँ यशोदा के हुए समक्ष खड़े है। माँ यशोदा बाल कृष्ण का हाथ पकड़े हुए है और दूसरे हाथ से कड़ा पहना रही है। माँ यशोदा को हल्के गुलाबी एवं आसमानी रंग की साड़ी पहने हुए तथा चेहरे पर प्यार व मातृत्व भाव लिए हुए बाल रूप कृष्ण की ओर देख रही है। माँ यशोदा के केश में सफेद फूलों का गजरा उनकी सुन्दरता व सौम्यता को प्रकट कर रहा है। वस्त्रों के साथ–साथ राजा रवि वर्मा ने आभूषणों को भी अत्याधिक महत्ता प्रदान की है, जैसे माँ यशोदा के कानों में रत्नों से जड़ित फूल झुमका, नाक में बुलाक, गले में रत्नों व मोतियों से युक्त लॉकेटनुमा कण्ठहार अलंकृत है। वही बालकृष्ण को एक नीले रंग के आसन पर खड़े बनाया गया है।

नीले रेशम के कपड़े पर स्वर्ण–धातु से निर्मित पायल, कडे, हार मोतियों से युक्त व एक लकड़ी का आभूषण पिटारी भी रखी हुई है। चित्र में बाल रूप कृष्ण की प्रतिमा इतनी सौम्य रूप में चित्रित की गई है कि दर्शक उसे देखकर मंत्रमुग्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त सीता का भूमि प्रवेश, राजकुमारी जानकी राजेई, मावोलिक्करा की अम्मन्तम्पुरान्, दमयन्ती को हंस नल का संदेश सुनता, शान्तनु और गंगा, फल हाथ में पकड़े एक वनिता आदि अनेकों चित्रों में यथार्थपूर्ण बहुमूल्य आभूषण दर्शक को अपनी ओर आकर्षित करते हैं जो राजा रवि वर्मा के चित्रों की प्रमुख विशेषता रही है।

राजा रवि वर्मा ने अपने जीवन काल में अनेकों पौराणिक कथा चित्र, छाया चित्र, दृश्य चित्र व देवी–देवताओं आदि विषय पर तैल रंग व लिथोग्रफी प्रेस के माध्यम से अनेकों चित्रों का निर्माण किया। रवि वर्मा ने अपने चित्रों में नारी सौन्दर्य को उभारने हेतु बहुमूल्य आभूषणों का प्रयोग किया है। जिसमें सफेद मोतियों की माला, नाक में अंकित बेसर व बुलाक, गले में कण्ठ से नाभि तक अनेकों रत्नों से युक्त मालाएँ यथार्थ पूर्ण प्रतीक होती है। 2 अक्टूर सन् 1906 को कला–कर्म करते हुए त्रिवेन्द्रम् के निकट राजा रवि वर्मा दिवंगत हो गये।[2] भारतीय चित्रकला के इतिहास में 'पितामह' कहलाने वाले राजा रवि वर्मा के अभूतपूर्व योगदान को हम कभी भी नहीं भूल पाएँगे। उनकी चित्र सम्पदा अनेकों युगों तक नई पीढ़ी का मार्ग–दर्शन करती रहेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गोस्वामी प्रेमचन्द्र – आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, जयपुर, 1995 पृ. सं. 11, 12*
2. *अग्रवाल गिर्राज किशोर अग्रवाल – कला और कलम (भारतीय चित्रकला का आलोचनात्मक इतिहास) अलीगढ, पृ. सं. 249*
3. *Magharam Parsram – Raja Ravi Verma – The painter prince 1848-1906, Bangalor 2003*
4. *Chawla Rupika – Painter colonial India, Grantha corporation, 2011*
5. *जोशी प्रभु – राजा रवि वर्मा – भारतीय कला जगत के अनश्वर नागरिक, स्मृति (पत्रिका)*